



शास्त्रीय वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, विवाह के स्थायित्व और दीर्घायु का मूल्यांकन करने के लिए 7वें भाव (जीवनसाथी और कानूनी साझेदारी) तथा 8वें भाव (जीवनसाथी की आयु और वैवाहिक बंधन, जिसे मांगल्य भाव कहा जाता है) के बीच के संबंध का परीक्षण करना आवश्यक होता है।

जब इन महत्वपूर्ण भावों पर बिना किसी सुरक्षात्मक शुभ दृष्टि के अत्यधिक और सघन पाप प्रभाव पड़ता है, तो शास्त्रीय ग्रंथ विशिष्ट ग्रहीय योगों (Yogas) का उल्लेख करते हैं जो गंभीर वैवाहिक संकट का संकेत देते हैं, जिसमें स्थायी अलगाव या वैधव्य (Vaidhavya) शामिल है।

वैवाहिक दीर्घायु के मूलभूत भाव

- सप्तम भाव और सप्तमेश:** जीवनसाथी के अस्तित्व, सामंजस्य और आपसी संबंध को नियंत्रित करता है।
- अष्टम भाव और अष्टमेश:** जीवनसाथी की आयु (जीवनकाल) और वैवाहिक बंधन की स्थिरता को नियंत्रित करता है।
- द्वितीय भाव और द्वादश भाव:** द्वितीय भाव सप्तम से अष्टम (जीवनसाथी की दीर्घायु) के रूप में कार्य करता है, जबकि द्वादश भाव स्थायी हानि (व्यय) और अलगाव के भाव के रूप में कार्य करता है।

7वें और 8वें भाव से जुड़े शास्त्रीय संयोजन

शास्त्रीय सिद्धांत ऐसे कई विशिष्ट संयोजनों की पहचान करते हैं जहाँ पापी ग्रहों का प्रभाव इन संवेदनशील भावों पर केंद्रित होता है:

1. 8वें भाव के प्रभाव में 7वें भाव का स्वामी (सप्तमेश)

- 7वें भाव में सप्तमेश और सूर्य के साथ राहु:** जब राहु 7वें भाव में स्थित हो, सप्तमेश सूर्य के साथ युति बनाए और इस संयोजन पर 8वें भाव के स्वामी की सीधी दृष्टि हो, तो साझेदारी की जीवंतता और भौतिक दीर्घायु दोनों को गंभीर संकट का सामना करना पड़ता है।
- शनि के साथ सप्तमेश पर मंगल की दृष्टि:** जब सप्तमेश शनि के साथ युति में हो, उस पर मंगल की दृष्टि हो और 8वें भाव में चंद्रमा राहु से पीड़ित हो, तो यह वैवाहिक बंधन में तीव्र भावनात्मक आघात और संरचनात्मक व्यवधान पैदा करता है।
- दुस्थान में पापी सप्तमेश की स्थिति:** जब सप्तमेश नैसर्गिक पापी ग्रह हो या किसी कठिन भाव (दुस्थान) में स्थित हो, जबकि मंगल और शनि 7वें या 8वें भाव में हों, तो रिश्ते की स्थिरता से समझौता होता है।

2. सातवें भाव पर क्रूर ग्रहों का सीधा प्रभाव

- सातवें भाव में तीन क्रूर ग्रह:** जब तीन नैसर्गिक क्रूर ग्रह (जैसे सूर्य, मंगल, शनि या राहु/केतु) बिना किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति, शुक्र या बुध) की दृष्टि के सातवें भाव में एक साथ स्थित होते हैं, तो वैवाहिक संबंध में भारी उथल-पुथल का सामना करना पड़ता है।
- सातवें भाव में बलवान क्रूर ग्रह:** जब नैसर्गिक क्रूर ग्रह बिना किसी शुभ ग्रह के प्रभाव के सातवें भाव में अत्यधिक दिशात्मक या स्थितिजन्य बल प्राप्त करते हैं, तो उनके आक्रामक और अलगाववादी गुण वैवाहिक जीवन पर हावी हो जाते हैं।

3. आठवें भाव (मांगल्य भाव) पर केंद्रित दोष

- आठवें भाव में सूर्य और शनि की युति:** क्रमशः जीवन शक्ति और क्षय का प्रतिनिधित्व करने वाले स्वाभाविक परस्पर शत्रु होने के कारण, आठवें भाव में इनकी संयुक्त उपस्थिति जीवनसाथी के स्वास्थ्य और कल्याण के संबंध में गंभीर अस्थिरता पैदा करती है।
- आठवें भाव में अपनी अशुभ राशि में पापी ग्रह:** आठवें भाव में किसी शत्रु या अशुभ राशि में स्थित एक नैसर्गिक पापी ग्रह इस भाव के विनाशकारी प्रभावों को और तीव्र कर देता है।

• **सप्तमेश और आठवें भाव पर पापी ग्रहों की दृष्टि:** जब सप्तम भाव के स्वामी और स्वयं आठवें भाव पर एक साथ पापी ग्रहों की दृष्टि पड़ती है, तो वैवाहिक संबंध निरंतर तनाव और खिंचाव से ग्रस्त रहता है।

4. दूसरे, आठवें और बारहवें भाव में अशुभ ग्रहों के योग

• **सप्तमेश और अष्टमेश का बारहवें भाव में होना:** विवाह और वैवाहिक दीर्घायु के कारको का सीधे व्यय भाव (हानि के भाव) में स्थित होना शारीरिक दूरी, अचानक अलगाव या एकाकीपन को दर्शाता है।

• **आठवें या बारहवें भाव में क्रूर अशुभ ग्रह:** जब तक कि शुभ ग्रहों की दृष्टि से संतुलन न बने, इन भावों में प्रबल अशुभ ग्रहों की स्थिति संबंधों के शीघ्र टूटने का कारण बन सकती है।

• **राहु, मंगल और शनि की युति:** ऐसे योग जहां राहु, मंगल और शनि सातवें या आठवें भाव में स्थित हों - या जहां मंगल और राहु दूसरे, सातवें या आठवें भाव में आ जाएं - संबंध की धुरी पर अत्यधिक दबाव पैदा करते हैं।

5. विशेष शास्त्रीय सूत्र: नवमेश और बृहस्पति दुस्थान में

फलित ज्योतिष में, नवम भाव भाग्य (किस्मत और ईश्वरीय कृपा) का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि बृहस्पति स्त्री की कुंडली में दिव्य रक्षक और पति कारक हैं:

• **शास्त्रीय सिद्धांत:** यदि नवम भाव के स्वामी (नवमेश) और बृहस्पति दोनों दुस्थान भावों - छठे भाव (ऋण/रोग/विवाद) या आठवें भाव (दीर्घकालिक संकट/आयु का जोखिम) - में स्थित हों, तो यह जीवनसाथी के लिए गंभीर कष्ट की ओर संकेत करता है।

• **एकल स्थिति (कोई एक छठे या आठवें भाव में):** यदि केवल एक कारक (या तो नवमेश या बृहस्पति) छठे या आठवें भाव में स्थित हो, तो यह मुख्य रूप से जीवनसाथी के खराब स्वास्थ्य, पुरानी शारीरिक दुर्बलता या बार-बार होने वाली चिकित्सीय समस्याओं को दर्शाता है।

• **दोहरी स्थिति (दोनों छठे या आठवें भाव में):** यदि नवमेश और बृहस्पति दोनों ही छठे या आठवें भाव में स्थित हों, तो शास्त्रीय ग्रंथ जीवनसाथी की आयु पर गंभीर प्रारंभिक संकट या साथी के असामयिक वियोग की चेतावनी देते हैं, जब तक कि कोई प्रबल शुभ ग्रह इसे निष्प्रभावी न कर रहे हों।

नवांश (D9) पुष्टिकरण नियम

शास्त्रीय ग्रंथ इस बात पर बल देते हैं कि जन्म कुंडली (D1) में दिखने वाले कठोर योगों की पुष्टि हमेशा नवांश (D9) में अवश्य की जानी चाहिए:

• **D9 के आठवें भाव और आठवें भाव के स्वामी पर क्रूर ग्रहों का प्रभाव:** यदि नवांश कुंडली में आठवां भाव या आठवें भाव का स्वामी भी नैसर्गिक क्रूर/पाप ग्रहों से पीड़ित है, तो कार्मिक कठिनाई की पुष्टि हो जाती है।

• **शुभ ग्रहों का सुरक्षात्मक प्रभाव:** यदि गोचर या जन्म कुंडली का बृहस्पति, शुक्र या कोई बली शुभ ग्रह दोनों में से किसी भी कुंडली के 7वें या 8वें भाव पर सहायक दृष्टि डालता है, तो इन योगों का अत्यंत नकारात्मक प्रभाव कम हो जाता है, जिससे अक्सर कोई गंभीर शारीरिक क्षति केवल अस्थायी कानूनी अलगाव, लंबी दूरी के जीवन या सुलझ जाने वाले संकट में बदल जाती है।

महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक टिप्पणी: आधुनिक संदर्भ

शास्त्रीय शब्दावली में, अत्यधिक ऊर्जावान अलगाव को दर्शाने के लिए अक्सर "वैधव्य" (widowhood) जैसे चरम शब्दों का उपयोग किया जाता था। समकालीन फलित ज्योतिष में:

• 7वें भाव और उसके स्वामी (भावेश) के गंभीर रूप से पीड़ित होने पर आमतौर पर वास्तविक शारीरिक मृत्यु के बजाय अलगाव, तलाक या लंबे समय तक दूरी के रूप में परिणाम सामने आते हैं।

- आधुनिक चिकित्सा प्रगति और जीवनसाथी की अपनी स्वतंत्र जन्म कुंडली में व्यक्तिगत दीर्घायु कारक (आयुर्दाय) उनके जीवनकाल पर प्राथमिक प्रभाव रखते हैं।
- साथी की कुंडली, वर्ग कुंडलियों के बल और सक्रिय दशा क्रमों का विश्लेषण किए बिना केवल एक कुंडली से कभी भी कोई निराशावादी निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिए।

<https://astroarpitanath.com/hindi/sutras-for-widowhood-or-separation/>

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।